आज़ादी के गीत

वंदे मातरम्
सिंहासन हिल उठे
सरफरोशी की तमन्ना
क़दम क़दम बढ़ाए जा
जोदि तोर डाक शुने केउ ना आशे
बोलियो सब मिल महाशय
वा वा वा
मेरे चरखे का टूटे न तार
प्राणों में ले भरी जवानी
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
भारत न रह सकेगा
ये है मेरा वतन
सारे जहां से अच्छा

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र

आज़ादी के गीत

वंदे मातरम्
सिंहासन हिल उठे
सरफरोशी की तमन्ना
क़दम क़दम बढ़ाए जा
जोदि तोर डाक शुने केउ ना आशे
बोलियो सब मिल महाशय
वा वा वा
मेरे चरखे का टूटे न तार
प्राणों में ले भरी जवानी
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
भारत न रह सकेगा
ये है मेरा वतन
सारे जहां से अच्छा

प्रस्तावना

मानव-इतिहास की एक वास्तविक युगान्तरकारी घटना थी, भारत का स्वतंत्रता-आंदोलन एवं तत्पश्चात् उपनिवेशवादी शासन से मुक्ति। उपनिवेशवाद, भारतीय इतिहास का ऐसा अध्याय है, जिसमें प्रत्येक वर्ग के लोगों ने क़दम से क़दम मिलाकर मुक्ति-आंदोलन में भाग लिया। सब भारतवासी चल पड़े विदेशी बेड़ियों से देश की आज़ादी दिलाने। उनकी छटपटाहट उनके कंठ से गीत बनी, कोटि-कोटि कंठों का सुर बनी और स्वरों की यह धारा त्याग, बलिदान की मिसाल बन गयी। काली अंधेरी रात के बाद स्वतंत्रता का अरुणोदय हुआ। मुक्ति आकाश में तिरंगा फहरा।

भारत की स्वतंत्रता-प्राप्ति में राजनीतिज्ञों के साथ-साथ आम जनता का भी योगदान रहा। उनमें कुछ ऐसे कवि, कलाकार और गायक थे, जिनकी रचनाएँ आज भी उतनी ही प्रेरक हैं। ये धरोहर हैं, हमारी पिछली पीढ़ी की, जिनकी उत्तराधिकार भावी पीढ़ी को सौंपा जाना चाहिए, ताकि वह जान सके कि तिरंगा लहराने का अधिकार हमें इतनी आसानी से नहीं मिला। यह दिन दिखाने के लिए कुछ लोग अपना सिर हथेली पर लेकर चल पड़े थे... "सरफ़रोशी की तमन्ना"... लिए "वंदे मातरम्"... गाते। उन्हें विश्वास था... "भारत न रह सकेगा हर्गिज़ गुलामखाना"..., क्योंकि उनके लिए अपना भारत "सारे जहाँ से अच्छा" था..., सो, "प्राणों में ले भरी जवानी..." वे बढ़े और बढ़ते ही गए। कहने को तो रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने कहा... "जोदि तोर डाक शुने केउ ना आशे, तौबे एकला चलो रे"..., पर वस्तुतः वे अकेले नहीं थे, सभी देशवासी उनके साथ थे।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र (सी सी आर टी) ने यह धरोहर नई पीढ़ी को सौंपने का बीड़ा उठाया है, एक छोटी-सी शुरुआत की है। युगांतरकारी कवियों के प्रेरणादायी गीतों की श्रव्य कैसेट सहित एक लघु पुस्तिका तैयार की है, जिसमें हमारे देश के महान कवियों, स्वतंत्रता सेनानियों, साहित्यकारों, नेताओं तथा क्रांतिकारियों की भावनाएँ संकलित हैं। आशा है, इन गीतों द्वारा श्रोताओं में देश-भक्ति की भावना पुनर्जागृत होगी।

सी सी आर टी, स्वतन्त्रता की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर अपना यह प्रयास कृतज्ञता-पूर्वक उन कलाकारों को समर्पित करता है, जिन्होंने कविता व संगीत द्वारा प्रेम और शांति का संदेश फैलाते हुए विदेशी ताकत से भारत को मुक्त किया।

1996

महानिदेशक
सी सी आर टी

वंदे मातरम्

बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय

वंदे मातरम्
सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्
शस्य श्यामलाम् मातरम्
वंदे मातरम्

शुभ्र ज्योत्सना पुलकित यामिनीम्
फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्
सुखदाम् वरदाम् मातरम्
वंदे मातरम्



बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय

साहित्य में आधुनिक शैली का सूत्रपात करने वाले बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय का न सिर्फ बांग्ला साहित्य में उच्च स्थानीय महत्त्व है, अपितु भारतीय साहित्य में उनके योगदान को निर्विवाद स्वीकार किया जाता है। इनके प्रसिद्ध उपन्यास 'आनंदमठ', जिसमें 'वंदे मातरम्' कविता भी है, की केन्द्रीयता जितनी स्वतंत्रता काल में थी, उतनी ही अब भी है। 'वंदे मातरम्' कविता ने जाने कितने ही देशवासियों को आंदोलित किया और उनमें राष्ट्र प्रेम की भावना जागृत की। यह कविता स्वतंत्रता काल में 'मंत्र' बन गयी थी। इसमें भारत की शस्य श्यामला धरती और प्रकृति का सौन्दर्यपूर्ण चित्रण करते हुए राष्ट्रीयता को उभारा गया है।

इनकी अन्य महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं– 'दुर्गेश नंदिनी', 'राजसिंह', 'कपालकुण्डला', 'चंद्रशेखर', 'विषवृक्ष', 'आनंदमठ', 'देवीचौधुरानी' इत्यादि। जीवन के असाधारण प्रसंग, राष्ट्रीय गौरव, क्षुद्रताओं का निषेध, मनुष्यता का स्नेह पूर्ण अंकन, धार्मिकता आदि इनकी रचनागत विशिष्टताएँ हैं। इन्होंने गतिशील तथा हल्की-फुल्की भाषा के सम्मिश्रण से विशिष्ट गद्य शैली भी सृजित की तथा बांग्ला भाषा को प्रतिष्ठित किया।

स्थाई

सा - रे -	- म प म	प - - -
वं - दे -	- मा - त	रम् - - -

म - प -	- नि सां नि	सां - - -
वं - दे -	- मा - त	रम् - - -

सा रे नि -	ध प - -	प ध म -	ग रे - -
सु ज लाम् -	- - - -	सु फ ला -	- म् - -

रे प म म	ग - रे ग	सां - - सां
म ल य ज	शी - - त	ला - - म्

सा - रे म	प म प -	प प नि॒ ध	(ध)प - - प
श - स्य श्या	- म ला -	म् मा - त	र - - म्

अंतरा

म - प -	(प)नि - नि -	नि नि सां नि	सा - - नि
शु - भ्र -	ज्यो - त्स्नाम्	पु ल कि त	या - - मि

सां - - सां
नी - - म्

प नि नि नि	सां नि सां -	सां ^सां रें सां नि॒	नि॒ ध ^सां नि॒ ध
फु - ल्ल कु	सु मि त -	द्रु म द ल	शो - - भि

^ध प - - प
नी - - म्

रे रे म म	ग रे - -	रे नि॒ ध नि॒	ध प - ध
सु हा - सि	नी म् - -	सु म धु र	भा - - षि

प - - प
णी - - म्

म प ^प नि नि	नि नि नि नि	- नि सां नि	सां - - सां
सु ख दा म्	व र दा म्	- मा - त	र - - म्

म - प -	- नि सां नि	सां - - सां
वं - दे -	- मा - त	र - - म्

म - प -	- नि सां नि	सां - - सां
वं - दे -	- मा - त	र - - म्

सिंहासन हिल उठे

सुभद्रा कुमारी चौहान

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी
बूढ़े भारत में भी आई, फिर से नई जवानी थी

गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी
दूर फिरंगी को करने की, सबने मन में ठानी थी

चमक उठी सन सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी
बुंदेले हरबोलों के मुंह, हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी

रानी गई सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी

अभी उम्र कुल तेइस की थीं, मनुज नहीं अवतारी थी
हमको जीवित करने आई, बन स्वतंत्रता-नारी थी
दिखा गई पथ, सिखा गई हमको जो सीख सिखानी थी

बुंदेले हरबोलों के मुंह, हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी



सुभद्रा कुमारी चौहान

राष्ट्रीय काव्य-धारा की सुप्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म प्रयाग, उत्तर प्रदेश में हुआ। उच्च शिक्षा समाप्त करने के बाद इनका विवाह नवलपुर के प्रसिद्ध वकील लक्ष्मण सिंह के साथ हुआ।

इन्होंने घरेलू कामकाज करते हुए भी राष्ट्रीय आंदोलन में हिस्सा लिया। कई बार जेल-यात्राएँ कीं। ये कुछ समय तक मध्य प्रदेश विधान सभा की सदस्या भी रहीं। भारत के प्राचीन सांस्कृतिक वैभव की प्रेरक स्मृतियों के साथ सुभद्रा जी ने अपने ओजस्वी, किंतु सहज, सरल कविताओं से युवा पीढ़ी में देश-प्रेम और स्वतंत्रता के लिए उत्सर्ग की भावना भरने में अद्वितीय सफलता प्राप्त की।

सुभद्रा जी की प्रारंभिक रचनाएँ 'त्रिधारा' पुस्तक में संकलित हैं। 'मुकुल' इनकी कविताओं का अन्य संग्रह है।

इनकी 'झांसी की रानी' कविता राष्ट्रीय जागरण का उच्च शंखनाद करती है। अंग्रेजों के छक्के छुड़ाने वाली झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के शौर्य का काव्यमय चित्रण इस रचना में मिलता है। राष्ट्रीयता की चेतना से भरी यह कविता आज़ादी की लड़ाई में अत्यंत लोकप्रिय हुई।

स्थाई

सा-सा-	सा-रे-	गग-ग	-गम-	प-पध	पपम-	प-म-	ग---
सिं-हा-	सनहिल	उठे-रा	-जवं-	शों-ने-	भृकुटि-	ता-नी-	थी---
रे-ग-	रे-ग-	रे-ग-	रे-ग-	ममप-	रेसा-रे	सा-सा-	सा---
बू-ढ़े-	भा-रत	में-भी-	आ-ई-	फिरसे-	नई-ज	वा-नी-	थी---

अंतरा

सांसां-सां	सां--सां	नि-नि-	ध-ध-	पपपप	ध-निनि	ध-प-	प---
गुमी-हु	ई--आ	ज़ा-दी-	की-की-	मतसब	ने-पह	चा-नी-	थी---
सां-सांसां	सां-सां-	नि-निनि	ध-ध-	पपपप	ध-निनि	ध-प-	प---
दू-रफि	रं-गी-	को-कर	ने-की-	सबने-	मनमें-	ठा-नी-	थी---
निनिनिनि	नि-निध	प-धप	म-ग-	मपमम	ग-रेसा	सा-सा-	सा---
चमकउ	ठी-सन्	स-त्ता-	वनमें-	वहतल	वा-रपु	रा-नी-	थी---
सा-सासा	सा-रे-	ग-ग-	ग-म-	पपपध	पम-म	प-म-	ग---
बु-दे-	ले-हर	बो-लों-	के-मुँह	हमने-	सुनी-क	हा-नी-	थी---
रे-रेग	रे-ग-	रे-ग-	रे-ग-	म-प-	ग-रेसा	रे-सा-	सा---
खू-बल	ड़ी-मर	दा-नी-	वो-तो-	झाँ-सी-	वा-ली-	रा-नी-	थी---

दूसरा अंतरा पहले अंतरे के समान गाया जाएगा।

सरफ़रोशी की तमन्ना

रामप्रसाद 'बिस्मिल'

सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है ज़ोर कितना बाज़ू - ए क़ातिल में है

रहबर - ए राह - ए मोहब्बत रह न जाए राह में
लज़्ज़त - ए सहरानवर्दी दूरी - ए मंज़िल में है

वक़्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमाँ
हम अभी से क्या बताएँ क्या हमारे दिल में है

अब ना पहले वलवले हैं और ना अरमानों की भीड़
एक मिट जाने की हसरत अब दिल - ए 'बिस्मिल' में है



राम प्रसाद 'बिस्मिल'

स्वतंत्रता संग्राम के देश प्रसिद्ध क्रांतिवीर, प्राणों की आहुति देने वाले अमर शहीदों में अग्रणी, कवि, विचारक तथा कुशल वक्ता राम प्रसाद 'बिस्मिल' का जन्म शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ। निर्भीक और तेजस्वी व्यक्तित्व के धनी 'बिस्मिल' ने हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के माध्यम से राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया। शेरगंज, बिचपुरी तथा मैनपुरी आदि में क्रांतिकारियों के साथ छापा मारा। काकोरी कांड मुकदमे में इनको 19 दिसम्बर, 1927 को गोरखपुर ज़िला जेल में फाँसी हो गई।

फाँसी के तख्ते पर चढ़ने के पूर्व उन्होंने अपनी अन्तिम इच्छा व्यक्त की– 'मेरी इच्छा है कि अंग्रेज़ी शासन का पतन हो' (आई विश द' डाउन ऑव् ब्रिटिश एम्पायर)।

इनकी महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं– 'वोल्शेविकों की करतूतें', 'मन की लहर', 'केथेराइन', 'स्वदेशी जंग' और 'क्रांतिकारी जीवन'। इन्होंने बांग्ला और अंग्रेज़ी से अनुवाद किया तथा 'राम' और 'अज्ञात' नाम से भी पत्रिकाओं में लेखन किया। श्री बिस्मिल ने जेल में आत्मकथा लिखी, जो हिन्दी भाषा की बहुमूल्य निधि है।

प्रस्तुत गीत में 'बिस्मिल' ने देश के लिए बलिदान होने की भावना दर्शायी है तथा दुश्मन की ताक़त को चुनौती दी है।

स्थाई

०ध -प ध- पर्म	प- -म गरे सा-	०ग -म प- धनिप	०ध -नि प- --
०सर -फ़ रो- शी-	की- -त मन्- ना-	०अब -ह मा- रे-	०दिल -में है- --

०ध -प ध- पर्म	प- -म गरे सा-	०ग -म प- धनिप	०ध -नि प- --
०दे -ख ना- है-	ज़ो- -र कित ना-	०बा -ज़ु ए- क़ा-	०तिल -में है- --

अंतरा

०ग -म प- नि-	सां- -सां निरें सां-	०नि निनि नि- निप	०ध -नि प- --
०रह -ब रे- रा-	हे- -मो ह- ब्बत	०र हन जा- ना-	०रा -ह में- --

०ग -म प- नि-	सां- -सां निरें सां-	०रें रेंरें रें- रेंसां	०रें -गं सां- --
०रह -ब रे- रा-	हे- -मो ह- ब्बत	०र हन जा- ना-	०रा -ह में- --

०नि निनि नि- निप	०ध -नि प- --	०ध -प ध- पर्म	प- -म गरे सा-
०र हन जा- ना-	०रा -ह में- --	०ल -ज़्ज़ ते- सह	रा- -न वर दी-

०ग -म प- धनिप	०ध -नि प- --
०दू -रि ए- मं-	०ज़िल -में है- --

बाकी सभी अंतरे इसी प्रकार गाए जाएँगे।

क़दम-क़दम बढ़ाए जा

कैप्टन राम सिंह

क़दम-क़दम बढाए जा
ख़ुशी के गीत गाए जा
यह ज़िन्दगी है क़ौम की
तू क़ौम पे लुटाए जा

तू शेरे-हिन्द आगे बढ़
मरने से कभी न डर
उड़ा दे दुश्मनों के सर
जोशे-वतन बढ़ाए जा

तेरी हिम्मत बढ़ती रहे
ख़ुदा तेरी सुनता रहे
जो सामने पड़े तेरे
तू ख़ाक में मिलाए जा

चलो दिल्ली पुकार के
क़ौमी निशाँ संभाल के
लालकिले पे गाड़ के
लहराए जा, लहराए जा

कैप्टन राम सिंह

कैप्टन राम सिंह का जन्म कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला गाँव में हुआ। चौदह वर्ष की आयु में वे गोरखा रेजिमेण्ट में भर्ती हो गये। इनमें संगीत के प्रति बहुत ही लगन थी। आज़ादी की उमंग में जब ये आज़ाद हिन्द फौज में भर्ती हुए तो नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने इनकी संगीत की रुचि को देखते हुए इन्हें आज़ाद हिन्द फौज के सैनिक बैण्ड के संगठन का जिम्मा सौंपा। कैप्टन राम सिंह ने आज़ाद हिन्द फौज के गानों की धुनें तैयार कीं तथा बाद में देशभक्ति के गीत भी लिखे।

कैप्टन राम सिंह का प्रस्तुत गीत 'क़दम क़दम बढाए जा' 24 अक्तूबर, 1943 को उस सम्मेलन में पहली बार गाया गया था, जिसमें नेताजी ने इंग्लैण्ड और अमरीका के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की थी। बाद में यह गीत आज़ाद हिन्द फौज के अभियान गीत का स्वर बन गया और भारतीय जनता में बहुत लोकप्रिय हुआ। देशभक्ति और मुक्ति की चाह से ओतप्रोत यह उत्कृष्ट गीत हमारी राष्ट्रीय चेतना पर आधारित साहित्य की मूल्यवान धरोहर है।

--प़	
--क़	

स्थाई

सा-प़	सा-रे	ग॒-रे	सा-सा	प-प	प-प	ध॒-ध॒	प-प
दमक़	दमब	ढ़ा-ए	जा-खु	शी-के	गी-त	गा-ए	जा-ये
सां-सां	ध॒-ध॒	प-प	ग॒-ग॒	प-प	ग॒-रे	ग॒-रे	सा-प़
ज़िं-द	गी-है	क़ौ-म	की-तू	क़ौ-म	पे-लु	टा-ए	जा-क़
सा-प़	सा-रे	ग॒-रे	सा--	प--	---	---	---
दमक़	दमब	ढ़ा-ए	जा--	---	---	---	---

--प	
--तू	

अंतरा

गं॒-रें	गं॒-रे	सां-ध॒	पपप	रें-सां	रें-रें	सां-ध॒	प-प
शे-रे	हिं-द	आ-गे	बढ़मर	ने-से	फिरभी	तू-न	डरउ
ध॒-ध॒	ध॒-ध॒	नि-नि	नि-नि	सां-गं॒	रें-सां	नि-ध॒	प-प
ड़ा-के	दुश्म	नों-का	सरजो	शे-व	तनब	ढ़ा-ए	जा-जो
म-म	ग॒-रे	ग॒-रे	सा-प़	सा-प़	सा-रे	ग॒-रे	सा--
शे-व	तनब	ढ़ा-ए	जा-क़	दमक़	दमब	ढ़ा-ए	जा--
प--	---	---	---				
---	---	---	---				

दूसरा अंतरा पहले अंतरे के समान गाया जाएगा ।

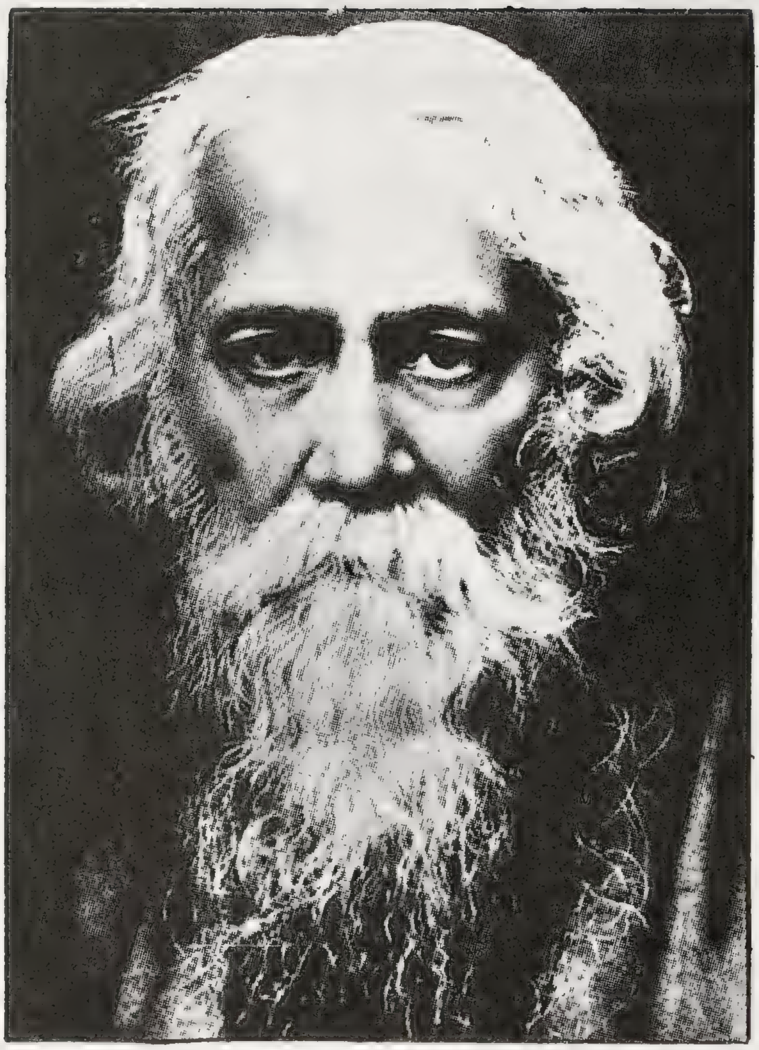
जोदि तोर डाक शुने केउ ना आशे

रवीन्द्र नाथ ठाकुर

जोदि तोर डाक शुने केउ ना आशे
तौबे एकला चौलो रे
जोदि केउ कौथा ना कौय
ओ रे ओ रे ओ औभागा
केउ कौथा ना कौय
जोदि शौबाई थाके मुख फिराए
शौबाई कौरे भौय
तौबे पौरान खुले ओ तुई
मुख फुटे तोर मोनेर कौथा
एकला बौलो रे

जोदि शौबाई फिरे जाए
जोदि गहन पौथे जाबार काले
केउ फिरे ना चाए
तौबे पौथेर काँटा ओ तुई
रौक्तोमाखा चौरोन तौले
एकला दौलो रे

जोदि आलो ना धौरे
जोदि झौड़बादोले आँधार राते
दुआर दै घौरे
तौबे बौज्रानौले आपोन तुई बुकेरे पाँजोर जालिए नीए
एकला चौलो रे



रवीन्द्र नाथ ठाकुर

रवीन्द्र नाथ ठाकुर भारतीय मनीषा के श्रेष्ठ प्रतिनिधि हैं। विलक्षण प्रतिभा के धनी श्री ठाकुर का साहित्य, संगीत और कला–तीनों क्षेत्रों में विशिष्ट योगदान है। इनकी कविताओं में जीवन की विराटता, अंतरंगता तथा रहस्यमयता के दर्शन होते हैं।

इन्होंने बचपन में अपने पिता देवेन्द्र नाथ से ज्योतिष एवं व्याकरण की शिक्षा प्राप्त की। इनकी कुछ महत्त्वपूर्ण रचनाएँ हैं- 'बनफूल', 'कवि काहिनी', 'संध्यासंगीत', 'गीतांजलि', 'पूरबी', 'प्रवाहिनी', 'महुआ', 'गोरा', 'विसर्जन', 'चित्रांगदा', 'डाकघर' इत्यादि।

'गीतांजलि' रचना पर इनको साहित्य का नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ। शांतिनिकेतन (विश्वभारती विश्वविद्यालय) की स्थापना इन्होंने की।

साहित्य के गद्य एवं पद्य दोनों क्षेत्रों में गुरुदेव का समान अधिकार था। कला, साहित्य की एक नई परंपरा इन्होंने शुरू की। उपनिषद्, बाउल विचार और चिरंतन सौंदर्यवाद आपकी रचनाओं के मूल में है।

प्रस्तुत गीत में कवि यह कहना चाहता है कि यदि कोई आप की पुकार नहीं सुनता, तो भी रुकिये नहीं, चलते रहिये..... अकेले ही सही। अपने लक्ष्य को पाने के लिए गतिशील रहिये।

स्थाई

--नि़ नि़नि़-	सा-सा रेरेरे	[रे]प-- म--	गमग- रेसा-
ऽऽजो दीतोर	डाक्शु नेकेउ	नाऽऽ आऽऽ	शेऽऽऽ तौबेऽ
रे-ग गरेगरे	सा-नि़ नि़नि़-	सा-सा रेरेरे	[रे]प-- म--
ऐक्ला चौलोऽऽ	रे ऽजो दीतोर	डाक्शु नेकेउ	नाऽऽ आऽऽ
गमग- रेसा-	रे-ग गरेगरे	सा-- -मम	म-प पप-
शेऽऽऽ तौबेऽ	ऐक्ला चौलोऽऽ	रे ऽऽ ऽतौबे	ऐक्ला चौलोऽ
[म]प-प [प]नि॒नि॒ध	प-म ग[रे]सा-	रे-ग गरेगरे	सारेम मप-
ऐक्ला चौलोऽ	ऐक्ला चौलोऽ	ऐक्ला चौलोऽऽ	रेऽऽ तौबेऽ
म-प पप-	[म]प-प [प]नि॒नि॒ध	प-म ग[रे]सा-	रे-ग गरेगरे
ऐक्ला चौलोऽ	ऐक्ला चौलोऽ	ऐक्ला चौलोऽ	ऐक्ला चौलोऽऽ
सा-			
रेऽ			

अंतरा

-मम ममप	पधनि॒ध प--	-सासा रेम-	पधनि॒ धसानि॒
ऽजोदि केउकौ	थानाऽऽ कौय्ऽ	ऽओरे ओऽऽ	रेऽऽ ओऽऔ

धपधप	ममप	पधनिध	प--	-पध	सांसां-	सांसांरें	$^{\text{नि}}$सां-नि
भागाऽऽ	केउकौ	थानाऽऽ	कौऽय्	ऽजोदि	शौबाई	थाकेऽ	मुख्फि
धपधप	मप-	पधनिध	प--	-सासा	रेम-	पधनि	धसांनि
रायेऽऽ	शौबाई	कौरेऽऽ	मौऽय्	ऽजोदि	शौबाई	थाकेऽ	मुख्फि
धपधप	मप-	पधनिध	प--	-मम	पपनि	धनि-	---
रायेऽऽ	शौबाई	कौरेऽऽ	भौऽय्	ऽतौबे	पौरान्	खुलेऽ	ऽऽऽ
धपम	म-प	$^{\text{प}}$निनिध	पम-	$^{\text{रे}}$गसा-	रे-ग	गरेगरे	सा--
ओतुई	मुख्फु	टेतीर	मोनेर्	कौथाऽ	ऐक्ला	बौलोऽऽ	रेऽऽ
-मम	म-प	$^{\text{प}}$निनिध	पम-	$^{\text{रे}}$गसा-	रे-ग	गरेगरे	सा-नि
ऽओतुई	मुख्फु	टेतोर	मोनेर्	बौथाऽ	ऐक्ला	बौलोऽऽ	रेऽजो
निनि-							
दितोर्							

बाकी सभी अंतरे इसी प्रकार गाए जाएँगे।

बोलियो सब मिल महाशय

कन्हैया लाल दीक्षित

बोलियो सब मिल महाशय मंत्र वंदे मातरम्
तीनों भुवन में गूँज जाये शब्द वंदे मातरम्
बन जाये सुखदाई हमारा मंत्र वंदे मातरम्
हो हमारी पाठ-पूजा मंत्र वंदे मातरम्

मंदिर व मस्जिद और गुरुद्वारा व गिरजा हो यही
मज़हव बने बस हम सभी का एक वंदे मातरम्

हाथ में हो हथकड़ी औ बेड़ियां हों पाँव में
गायेंगे उनको बजाकर गीत वंदे मातरम्

भारत हमारा देव-मंदिर और मस्जिद भी यही
हिन्दू-मुसलमाँ हों उपासक मंत्र-वंदे मातरम्

इसलिए धिक्कार है सौ बार जो कहता नहीं
प्रेम में उन्मत्त होकर मंत्र वंदे मातरम्

कन्हैया लाल दीक्षित ‘इन्द्र’

कन्हैया लाल दीक्षित ‘इन्द्र’ द्वारा लिखित ‘बोलियो सब मिल महाशय मंत्र ‘वंदे मातरम्’ गीत उन्हीं द्वारा संगृहीत गीतों की पुस्तक ‘आज़ादी की उमंग’ में संकलित है। बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय कृत ‘वंदे मातरम्’ गीत अपने युग की स्वतंत्रता का मंत्र बन गया था। बाद में उसकी अनुकृति में अनेक गीतों की रचना हिन्दी तथा अन्य भाषाओं में भी हुई। उसी शृंखला में ‘बोलियो सब मिल महाशय’ गीत में श्री ‘इन्द्र’ ने सर्वधर्म समभाव को प्रस्तुत करते हुए आज़ादी के जोश को दर्शाया है।

भारत की गुलामी की बेला में जो स्वतंत्रता का उद्घोष ‘वंदे मातरम्’ कह कर नहीं करता, उसे इस कविता में धिक्कारा गया है। कवि का मन्तव्य यह है कि हाथ में हथकड़ी तथा पाँव में बेड़ी होने पर भी ‘वंदे मातरम्’ की गर्जना करते रहनी चाहिए।

स्थाई

सा-सा ग- प-	निनिनि नि- नि-	प-प नि- रें-	सां-सां सां- --
बो-लि यो- सब	मिलम हा- शय	मं-त्र वं- दे-	मा-त रम- --
प-प नि- रें-	सां-सां सां- सां-	सां-सां सांसां सां-	रें-नि नि- नि-
मं-त्र वं- दे-	मा-त रम- ती-	नो-भु वन में-	गूं-ज आ- ए-
सांध- ध- ध-	निप- प- प-	सांध- ध- ध-	निप- प- धप
शब्द- वं- दे-	मा-त रम- --	श-ब्द वं- दे-	मा-त रम- बन
पम- म- ध-	पम- म- म-	म-म म- नि-	(प)मगग ग- ग-
आ-ए सुख दा-	ई-ह मा- रा-	मं-त्र वं- दे-	मा-त रम- --
ग-ग प- प-	नि-नि नि- नि-	प-प नि- रें-	सां-सां सां- --
हो-ह मा- री-	पा-ठ पू- जा-	मं-त्र वं- दे-	मा-त रम- --
प-प नि- रें-	सां-सां सां- --	प-प नि- रें-	सां-सां सां- --
मं-त्र वं- दे-	मा-त रम- --	मं-त्र वं- दे-	मा-त रम- --

अंतरा

			ध-
			००० ०० मं-

ध-ध ध- नि॒ध	ध-ध ध- ध-	मरेरे मम धप	नि॒-नि॒ नि॒- पप
दिर-व मस जिद	औ-र गुरू द्वा-	रा-ब गिरी जा-	हो-य हीं- मज़
पपप प- (नि)प-	पपप प- प-	ध॒-ध॒ नि॒- रें॒-	सां-सां सां- --
हबब ने- बस	हमस भी- का-	ए-क वं- दे-	मा-त रम- --
ध॒-ध॒ नि॒- रें॒-	सां-सां सां- --	ध॒-ध॒ नि॒- रें॒-	सां-सां सां- --
ए-क वं- दे-	मा-त रम-	ए-क वं- दे-	मा-त रम- --

अंतरा

मगम सा- सा-	मगम सा- सा-	प-प प- पसा	रे॒-रे॒ रे॒- --
हा-थ में- हों-	हथक ड़ी- और	बे-ड़ि याँ- हों-	पाँ-व में- --
सा-सा ग- पप	नि॒-नि॒ नि॒- नि॒-	प-प नि॒- रें॒-	सां-सां सां- --
गा-एँ गे- उन	को-ब जा- कर	गी-त वं- दे-	मा-त रम- --
प-प नि॒- रें॒-	सां-सां सां- --	प-प नि॒- रें॒-	सां-सां सां- --
गी-त वं- दे-	मा-त रम- --	गी-त वं- दे-	मा-त रम- --

तीसरा अंतरा पहले अंतरे के समान तथा चौथा अंतरा दूसरे अंतरे के समान गाया जाएगा ।

वा वा वा

सुब्रह्मण्यम भारती

वा वा वा। वा वा वा
वा वा वा। वा वा वा

उलि पड़ैत कण्णिनाय वा वा वा
उरूदि कोण्ड नेंजिनाये वा वा वा
कनि पड़ैत मोलिइनाय वा वा वा
कडुमैं कोण्डु तोलिइनाय वा वा वा

तेलियू पेट्रा माड़िंयिनाय बा वा वा
सिरू मैं कण्डु पोंगुवाय वा वा वा
येलिमै कण्डि इरंगुवाय वा वा वा
येरू पोल नडयैनाय वा वा वा

इलय भारदत्तिनाय वा वा वा
येदिरि ला वलत्तिनाय वा वा वा
कल्लैयिरन्द नाट्टि ले निंड्रेरूम
उदय नाई रोप्पावे वा वा वा

कल्लैयिरन्द नाट्टि ले मुनपोले
कल्लैये शिरक्क वंदनई वा वा वा
विल्लायु मानवू यावयुम पारतन पोल
विल्लयि नाल विल्लकू वाय वा वा वा



सुब्रह्मण्यम भारती

तमिल भाषा के महान कवि सुब्रह्मण्यम भारती का जन्म ज़िला तिरुनेलवेल्ली, तमिलनाडु के एट्टयपुरम् नामक स्थान में हुआ था। इन्होंने अनेक सौंदर्यमयी तथा भावपूर्ण कृतियों की रचना के साथ-साथ राजनैतिक दृष्टि से सम्पन्न क्रांतिधर्मी कविताएं भी लिखीं। इनकी कविताओं में देशप्रेम एवं तमिल साहित्य के प्रति भावों के उद्‌गार मिलते हैं।

इनकी महत्त्वपूर्ण रचनायें हैं- 'भारत्तियार कवि दैहळ', 'कृष्णन् पाट्टु', 'ज्ञानरथम्' इत्यादि।

इन्हें अंग्रेजी, संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, बांग्ला, फ्रेंच, तेलुगु, कन्नड़ इत्यादि भाषाओं का ज्ञान था। इन्होंने अपनी कविताओं का अंग्रेजी में तथा रवीन्द्र नाथ ठाकुर की कहानियों और 'भगवद्‌गीता' का तमिल में अनुवाद किया है। आधुनिक काल के तमिल कवियों में राष्ट्रीय कवि के रूप में इनका नाम अग्रणी है।

प्रस्तुत राष्ट्रीय गीत में कवि देश की युवा पीढ़ी का आह्वान करता है। उसकी मान्यता है कि युवक उगते सूर्य की तरह हैं तथा उनकी आँखों में रोशनी एवं वाणी में मिठास है। ऐसे युवक-युवतियाँ भारत की लुप्त होती चमक और समृद्धि को वापस लाने हेतु संघर्ष करें, देश के लिए मर मिटें।

स्थाई

सा--	सा-ध़	सा--	---	सानि़रेसा	सानि़ध़	सा--	---
वाऽऽ	वाऽऽ	वाऽऽ	ऽऽऽ	वाऽ ऽऽ	वाऽऽ	वाऽऽ	ऽऽऽ

अंतरा

सासासा	सा-सा	सा-सा	सा-सा	सानि़रेसा	सानि़-	ध़नि़ध़-	---
ओलिप	डैऽत्त	कऽण्णि	नाऽय्	वाऽ ऽऽ	वाऽऽ	वा ऽऽ	ऽऽऽ
ध़ध़ध़	नि़-नि़	रे-ग	ग-सा	सा--	सा-ध़	सा--	---
उरुदि	कोऽण्ड	नेंऽजि	नाऽय्	वाऽऽ	वाऽऽ	वाऽऽ	ऽऽऽ
गगग	ग-ग	गगग	रे--	नि़ध़--	नि़-रे	नि़रे--	---
कलिप	डैऽत्त	मोलियि	नाऽय्	वाऽऽऽ	वाऽऽ	वाऽऽऽ	ऽऽऽ
नि़नि़नि़	रे-रे	ग-प	मगरे	सा--	सा-ध़	सा--	---
कडुमे	कोऽण्ड	तोऽलि	नाऽय्	वाऽऽ	वाऽऽ	वाऽऽ	ऽऽऽ

बाकी अंतरे इसी प्रकार गाए जाएँगे ।

मेरे चरखे का टूटे न तार

शैलेन्द्र चतुर्वेदी

मेरे चरखे का टूटे न तार, हरदम चलाता रहूँ

भारत के संकट पे तन-मन लगा दूँ
प्राणों को कर दूँ न्यौछार, खद्दर बनाता रहूँ

खद्दर के कपड़े स्वदेशी बना के
विदेशी में ठोकर मार, घिन्नी घुमाता रहूँ

चुटकी से तागे को बट करके जोड़ूँ
हरि का बनाऊँ मैं हार, फरही दबाता रहूँ

विदेशी कपड़े के होंगे हवन अब
कर दें जलाकर के छार, आहुति चढ़ाता रहूँ

शैलेन्द्र चतुर्वेदी

शैलेन्द्र चतुर्वेदी लोकधुनों पर आधारित गीत लिखने वाले महत्त्वपूर्ण गीतकार रहे हैं। यह गीत मूलतः 'चरखा गीत' है। गांधी जी के स्वदेशी तथा चरखे का कार्यक्रम जब गाँव-गाँव पहुँच गया, तब उस पर आधारित अनेक गीतों की रचना हुई। यह गीत उन्हीं गीतों में से एक है। पूर्वी उत्तर प्रदेश की महिलाएँ बारातियों को खाना खिलाते हुए इस तरह के गीत गाती हैं। लोकभाषा में इसे 'गारी-गीत' कहते हैं।

यह मूल रूप से 'स्वराज्य' और 'स्वदेशी' से जुड़ा गीत है। इस गीत ने उन देशवासियों को प्रोत्साहित एवं आंदोलित किया, जिन तक आज़ादी की गूँज लिखित साहित्य के माध्यम से नहीं पहुँच पायी थी। यह गीत मौखिक रूप से लोकप्रिय हुआ।

स्वतंत्रता के नायकों के आंदोलन, कार्रवाइयों तथा बलिदानों का आम जनता पर जो अभूतपूर्व प्रभाव हुआ, वह इस रचना में सहज एवं प्रभावोत्पादक ढंग से अभिव्यक्त हुआ है। इसमें राष्ट्रीय चेतना, लोकजीवन तथा परंपरा को वाणी मिलती है।

स्थाई

| ० गप-
 ० मेरेऽ

धसांसां -रेंसा | नि-ध -प- | प-ध --- | ग-मं --प
चरखे ऽकाऽ | टूऽटे ऽनाऽ | ताऽऽ ऽऽर | हरद ऽमच

ग-सा रे-सा | सा-- --- | ग-- --- | ग-म --प
लाऽता ऽऽर | हूँऽऽ ऽऽऽ | ओऽऽ ऽऽऽ | हरद ऽमच

ग-सा रे-सा | सा-- --- | ग-- --- | ग-म --प
लाऽता ऽऽर | हूँऽऽ ऽऽऽ | ओऽऽ ऽऽऽ | हरद ऽमच

ग-सा रे-सा | सा-- --- |
लाऽता ऽऽर | हूँऽऽ ऽऽऽ |

अंतरा

ग-प पप- | प-ध -नि- | धधनि -ध- | प-- प--
भाऽर तकेऽ | संऽक ट,पेऽ | तनम नलऽ | गाऽऽ दूँऽऽ

ग-प पप- | प-- धनि- | धधनि -ध- | प-- ---
तनम नलऽ | गाऽऽ दूँऽऽ | तनम नलऽ | गाऽऽ दूँऽऽ

ग-प	पप-	प-ध	-नि-	धधनि	-ध-	प-प	गप-
भाऽर	तकेऽ	संऽक	टपेऽ	तनम	नलऽ	गाऽदूँ	प्रांऽऽ
धसां-	सां--	नि॒नि॒ध	--प	ध--	---	ग-म	--प
णोंऽऽ	कोऽऽ	करदूँ	ऽऽन्यौ	छाऽऽ	ऽऽर	खऽद्द	रऽब
ग--	सारेसा	सा--	---	ग--	---	ग-म	--प
नाऽऽ	ताऽर	हूँऽऽ	ऽऽऽ	ओऽऽ	ऽऽऽ	खऽद्द	रऽब
ग--	सारेसा	सा--	---				
नाऽऽ	ताऽर	हूँऽऽ	ऽऽऽ				

बाकी सभी अंतरे इसी प्रकार गाए जाएँगे ।

प्राणों में ले भरी जवानी

आज़ाद हिन्द फौज का गीत

प्राणों में ले भरी जवानी उठ आँधी बन जाएँगे
हम भारत के वीर सिपाही अब जौहर दिखलाएँगे

हम दीवानों को अब कोई पथ में आ मत टोकना
हमें मिली है आज चुनौती बढ़ने से मत रोकना
अगले पिछले सारे बदले आज चुकाए जाएँगे

जब तक हम जीवित हैं कोई कैसे आँख उठाएगा
लहराते खेतों को कोई कैसे धूल बनाएगा
दुश्मन के शोणित से अब हम अपनी प्यास बुझाएँगे

तू जननी तू जन्म भूमि है तेरी अमर कहानी है
धरती का ये मुकुट हिमालय तेरी अमिट निशानी है
कोटि-कोटि कंठों से अब हम तेरी महिमा गाएँगे



आजाद हिन्द फौज का गीत

भारत को आज़ाद कराने में आज़ाद हिन्द फौज का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने यूरोप तथा दक्षिण पूर्व एशिया में भारत के देशभक्त सैनिकों को संगठित कर देश की स्वतन्त्रता के लिए कूच कराया। उनके सैनिक-अभियान से भारत की जनता में स्वदेश प्रेम की अभूतपूर्व जागृति आयी। नेताजी, उनकी सेना तथा भारत की प्रशस्ति में देश-प्रेम तथा मुक्ति की चाह से ओतप्रोत लोकप्रिय साहित्य की रचना की गयी, जो हमारे राष्ट्रीय साहित्य की अमूल्य निधि है।

आज़ाद हिन्द फौज के गीतों व प्रयाण-गानों की रचना करने वालों में सर्वश्री मुमताज़ हुसैन, गुरुबख़्श सिंह ढिल्लों, कल्याण सिंह 'हसरत', राम सिंह, दिलीप सिंह राणा, प्रकाश सिंह, ए.कादिर आदि ने देशभक्ति के ज्वार को शब्दों में बखूबी बाँधा है। इन गीतों की संगीतात्मक प्रस्तुति भी प्रभावोत्पादक थी, जिसने आज़ाद हिन्द फौज के सैनिकों को स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए उद्वेलित किया।

प्रस्तुत गीत का रचयिता भारत भूमि पर गर्व करता है अैर दुश्मन की चुनौती के बावजूद आगे बढ़ने का हौसला रखता है। ललकारते हुए कवि कहता है—"जब तक हम जीवित हैं, किसकी मजाल है, जो आँख उठाये ?"

स्थाई

सा-सा- गरेसा-	मम-म म-म-	मम-प ध-रेरे	सां-सां- सां---
प्रा-णों- में-ले-	भरी-ज वा-नी-	उठ-आँ धी-बन	जा-एँ- गे---
सासा-सा निनिध-	नि-निध पमप-	धधधप ममगग	सा-रे- ग---
हम-भा रतके-	वी-रसि पा-ही-	अबजौ- हरदिख	ला-एँ- गे---
सासा-रे गगधप	म-म- म---	मम-प धधरेंरें	सां-सां- सां---
अब-जौ हरदिख	ला-एँ- गे---	अब-जौ हरदिख	ला-एँ- गे---

अंतरा

गगग- म-म-	प-म- प-म-	धधध- ध-धध	धपमप ध---
हमदि- वा-नों-	को-अब को-ई-	पथमें- आ-मत	टो--क ना---
निनि-नि नि-नि-	ध-धसां नि-नि-	सांसांसां- सां-रेंगं	रेंसांनिध सां---
हमें-मि ली-है-	आ-जचु नौ-ती-	बढ़ने- से-मत	रो--क ना---
सांसांसां- नि-ध-	नि-निध पमप-	ध-धप म-ग-	सा-रे- ग---
अगले- पिछले-	सा-रे- बदले-	आ-जचु का-ए-	जा-एँ- गे---
सा-सारे ग-धप	म-म- म---	म-मप ध-रें-	सां-सां- सा---
आ-जचु का-ए-	जा-एँ- गे---	आ-जचु का-ए-	जा-एँ- गे---

बाकी सभी अंतरे इसी प्रकार गाए जाएँगे।

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा

श्यामलाल गुप्त 'पार्षद'

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झंडा ऊंचा रहे हमारा

सदा शक्ति बरसाने वाला
प्रेम सुधा सरसाने वाला
वीरों को हर्षाने वाला
मातृ भूमि का तन-मन सारा

इस झण्डे के नीचे निर्भय
हो स्वराज्य जनता का निश्चय
बोलो भारत माता की जय
स्वतंत्रता हो ध्येय हमारा

इसकी शान न जाने पाए
चाहे जान भले ही जाए
विश्व विजय करके दिखलाए
तब होवे प्रण पूर्ण हमारा



श्याम लाल गुप्त 'पार्षद'

कवि, विचारक तथा स्वतंत्रता संग्राम के योद्धा श्याम लाल गुप्त 'पार्षद' का जन्म नर्वल, कानपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ। साहित्य सम्मेलन की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर इन्होंने थोड़े समय तक अध्यापन कार्य किया, तत्पश्चात् कांग्रेस के कार्यों में जुट गए। कई बार जेल-यात्रा की। गणेश-शंकर 'विद्यार्थी' के संपर्क में कविता लिखने लगे, झण्डा गान भी उन्हीं की प्रेरणा से लिखा। श्री पार्षद द्वारा रचित गीत 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा' ने राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन को अत्यंत प्रभावित किया। यह गीत 13 अप्रैल, 1924 को कानपुर के फूलबाग (अब गणेश शंकर उद्यान) में 'जलियाँवाला बाग दिवस' पर आयोजित सभा में श्री जवाहर लाल नेहरू के साथ पहली बार सामूहिक रूप से गाया गया था। बाद में यह ध्वज-गान सारे देश में लोकप्रिय हुआ। स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद भारत सरकार ने श्री 'पार्षद' को 'पद्मश्री' उपाधि से सम्मानित किया।

सहज भाषा में राष्ट्रीय संवेदना को जगा देना इनकी कविताओं की विशेषता है। भारतीय परंपरा और मानस के अनुकूल ध्वज-गान रचना का आदिपुरुष हिन्दी भाषा में इनको माना जा सकता है।

स्थाई

सा-सानि़ सा-नि़ध़ नि़रेरेसा रेगुरे- सा-सानि़ सा-नि़ध नि़रे-रे रेगुरे-
विजयी- विश्वति रं-गा- प्या-रा- झं-डा- ऊँ-चा- रहे-ह मा-रा-

अंतरा

मम-ग रेगसासा रेगमप ग-रे- म-मग रेगसासा रेगमप ग-रे-
सदा-श -क्तिसर सा-ने- वा-ला- प्रे-मसु धा-बर सा-ने- वा-ला-

प-प- प-धप मगमप ग-रे- सा-सानि़ सासानि़ध़ नि़रेरेसा रेगुरे-
वी-रों- को-हर षा-ने- वा-ला- मा-तृभू -मिका- तनमन सा-रा-

सा-सानि़ सा-नि़ध नि़रे-रे रेगुरे-
झं-डा- ऊँ-चा- रहे-ह मा-रा-

बाकी सभी अंतरे इसी प्रकार गाए जाएँगे।

भारत न रह सकेगा हरगिज़ ग़ुलामखाना

ज्योति शंकर

भारत न रह सकेगा हरगिज़ ग़ुलामखाना
आज़ाद होगा-होगा, आता है वो ज़माना

खूं खौलने लगा है हिन्दोस्तानियों का
कर देंगे ज़ालिमों का, हम बन्द जुल्म ढाना

कौमी तिरंगे झंडे पे जाँ निसार अपनी
हिन्दू-मसीह-मुसलिम गाते हैं यह तराना

परवाह अब किसे है जेल-ओ-दमन की, प्यारों
इक खेल हो रहा है फाँसी पे झूल जाना

भारत वतन हमारा, भारत के हम हैं सैनिक
भारत के वास्ते है मंज़ूर सर कटाना

ज्योति शंकर

ज्योति शंकर जी को लोग प्यार से 'मास्टर नूरा' भी कहकर बुलाते थे।

प्रस्तुत गीत भारत की आज़ादी के सपने का गीत है, जिसमें देश-प्रेम की लहर, भविष्य की आकांक्षा तथा वीरों के बलिदान की तमन्ना झलकती है। देश में स्वतंत्रता की उठती तरंगों को शब्द देते कवि ज़ुल्म और सितम के खिलाफ़ खड़ा होता है। कवि का मानना है कि स्वतंत्रता के वीर को क़ैद की बिल्कुल परवाह नहीं होती। फाँसी पर झूलने को वह जीवन का सहज खेल समझता है। तिरंगे के लिये भारत का कोई भी देशभक्त अपनी जान न्यौछावर कर सकता है।

							--प
						०	--भा

स्थाई

सासाप	पपम	प-प	-पप	सासाप	म-गु	म-म	--नि़
रतन	रहस	के-गा	-हर	गिज़गु	ला-म	खा-ना	--आ
नि़-नि़	रे-रे	म-म	-धु-	प-	मगुरेसा	सा-सा	--प
ज़ा-द	हो-गा	हो-गा	-आ-	ता-है	वो--ज़	मा-ना	--आ
प-नि	रेंसांनि	सां-सां					
ता-है	वो-ज़	मा-ना	---	---	---	---	---
						---	--प
						०००	००खुँ

अंतरा

गं-गं	रें-सां	रें-रें	-प-	रें-रें	सां-नि	सा-सा	-धध
खौऽल	ने-ल	गा-है	-हिं-	दो-स	ता-नि	यों-का	-कर
ध-ध	ध-ध	नि-नि	-नि	प-नि	रेसानि	सां-सां	---
दें-गे	ज़ा-लि	मों-का	-हम	बं-द	ज़ु-ल्म	ढा-ना	---
							--म
						०	--कौ

अंतरा

म-म	पमगु	म-म	-म-	ध-ध	निपम	पपप	--ध
मी-ति	रं-गे	झं-डे	-पे-	जॉ-नि	सा-र	अपनी	--हिं
ध-ध	ध-ध	नि-नि	--नि	प-नि	रेंसांनि	सां-सां	---
दू-म	सी-ह	मुस्लिम	--गा	ते-हैं	ये-त	रा-ना	---

तीसरा अंतरा पहले अंतरे के समान तथा चौथा अंतरा दूसरे अंतरे के समान गाया जाएगा।

ये है मेरा वतन

इक़बाल

ये है मेरा वतन
इसपे कुर्बान है जान औ' तन, जान औ' मन

चिश्ती ने जिस ज़मीं में पैग़ामे हक़ सुनाया
नानक ने जिस चमन में वहदत का गीत गाया
तातारियों ने जिसको अपना वतन बनाया
जिसने हेजाज़ियों से दश्ते अरब छुड़ाया

सारे जहाँ को जिसने इल्मो हुनर दिया था
यूनानियों को जिसने हैरान कर दिया था
मिट्टी को जिसके हक़ ने ज़र का असर दिया था
तुर्कों का जिसने दामन हीरों से भर दिया था

टूटे थे जो सितारे फ़ारस के आसमाँ से
फिर ताब दे के जिसने चमकाए कहकशाँ से
वहदत की लय सुनी थी दुनिया ने जिस मकाँ से
मीरे अरब को आई ठंडी हवा जहाँ से

गौतम का जो वतन है, जापान का हरम है
ईसा के आशिकों को मिस्ले यरूशलम है
मदफ़ून जिस ज़मीं में इस्लाम का हरम है
हर फूल जिस चमन का, फिरदौस है, इरम है

स्वर लिपि

ये है मेरा वतन

स्थाई

०	-सासा
	-येहै

ध-	-पम	पप-	-सासा	प-	-मग	मम-	-सासानि̣
मे-	-राव	तन-	-येहै	मे-	-राव	तन-	-इसपे

नि̣नि̣	-सानि̣	नि̣-	-नि̣प	ध̣--	-नि̣नि̣	सासा-	-सानि̣
कुर	-बान	है-	-जानो	तन-	-जानो	मन-	-येहै

सासारे̣	सासानि̣	सा-सारे̣	सासाप̣ध̣	नि̣-नि̣सा	नि̣-प̣ध̣	नि̣-नि̣सा	नि̣-नि̣नि̣
मे-राव	तनयेहै	मे-राव	तनयेहै	मे-राव	तनयेहै	मे-राव	तनयेहै

प-	मग	मम	सासा	ध̣-	-निसां	प-	-सासा
मे-	-राव	तन-	-येहै	मे-	-राव	तन-	-येहै

प-	-मग	मम-	--
मे-	-राव	तन-	--

अंतरा

सासा
-चिर

धृ-पप	-मपप	धृ-	-सा	प-पम	-गम-	प-	-ग
ती-नेजिस	-ज़मी-	में-	-पै	गा-मेहक	-सुना-	या-	-ना

ग-गग	-मरेसा	धृनिधृ-	--धृनि	सागगम	-धपम	म-	-सा
नकनेजिस	-चमन	में---	--वह	दतकागी	-तगा-	या-	-ता

धृ-पप	-मपप	धृ-	-सा	प-पम	-गम-	प-	-ग
ता-रियो	-नेजिस	को---	---अप	ना-वतन	-बना-	या---	--जिस

ग-गग	मरेसा-	धृनिधृ-	--धृनि	सागगम	-धृपम	म-	-सानि
ने-हैजा	-जियों-	से---	--दश	तेअरब	-छुड़ा-	या-	-येहै

मेरा वतन - - - - - | ०ग

अंतरा | ० ०सा

ग-गग	-गरेम	म-	-म	नि-निनि	-निसारे	रे-	-रे
रे-जहाँ	-कोजिस	ने-	-इल	मो-हुन	-रदिया	था-	-यू

रे-रेरे	-रेमध	प-	-प	म-गरे	रे-रे-रे	सा-	०ग
ना-नियो	-कोजिस	ने-	-है	रा-नक	र-दिया	था-	-मि

ग-गग	-गरेम	म-	-म	नि-निनि	-निसारे	रे-	-रे
ट्टी-कोजि	सकेहक	ने-	-जर	का-अस	रदिया-	था-	-नु

रे-रेरे	-रेमध	प-	-प	म-गरे	रे-रे-रे	सा-	०सानि
कों-काजि	सनेदा-	मन-	-ही	रों-सेभ	रदिया-	था-	-येहै

मेरा वतन - - - - -

तीसरा अंतरा पहले अंतरे के समान तथा चौथा अंतरा दूसरे अंतरे के समान गाया जाएगा।

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा

इक़बाल

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा
हम बुलबुले हैं इसकी गुलसिताँ हमारा

परबत वो सबसे ऊँचा, हमसाया आसमाँ का
वो सन्तरी हमारा, वो पासबाँ हमारा
गोदी में खेलती हैं जिसकी हज़ारों नदियाँ
गुलशन है जिनके दम से रश्के-जिनाँ हमारा

मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा

स्थाई

ग गरे सारे -नि़	सा सा - -	प़ध़ सा रेग -म	(रे)ग गरे मग रेसा
सा रे- जहाँ -से	अ च्छा - -	हिं- दो स्तां -ह	मा राह मा- रा-

ग गरे सारे -नि़	सा सा - -	गम प पप -ग	मध प - -
सा रे- जहाँ -से	अ च्छा - -	हम बुल बुलें -हैं	इस की - -

गम प (ध)मग -रे	सा सासा सानि़ ध़प़	ग गरे सारे -नि़	सा सा - -
ये- गुल सिता -ह	मा राह मा- रा-	सा रे- जहाँ -से	अ च्छा - -

अंतरा

गग गग ग गम	गरे रेसा सा -	प़ध़ सा रेग -म	(रे)ग ग - -
पर बत वो सब	से- ऊँ- चा -	हम सा याआ -स	माँ का - -

गम प पप -ग	मध प - -	गम प (ध)मग -रे	सा सासा सानि़ ध़प़
वो- सं तरी -ह	मा- रा - -	वो- पा- सबाँ -ह	मा राह मा- रा-

ग गरे सारे -नि़	सा सा - -
सा रे- जहाँ -से	अ च्छा - -

अंतरा

साप प पप -ध	गप मग (रे)ग -	साप प पप -ध	गप मग (रे)ग -
गो- दी मेंखे -ल	ती- हैं- - -	इस की हज़ा -रों	नदि यां- - -

म मम म मम	गम गरे साध़ सारे	गम प^{ध} मग -रे	सासासा सानि़ ध़प़
गुल शन है जिन	के- दम से- --	रश के जिनां -ह	मा राह मा- रा-

ग गुरे सारे -नि़	सा सा - -
सा रे- जहाँ -से	अ च्छा - -

अंतरा

नि़नि़ नि़नि़ नि़नि़ -नि़	नि़सा सा - -	साप पप पप -ध	गप मग $^{रे}$ग -
मज़ हब नहीं -सि	खा- ता - -	आ- पस मेंबै -र	रख ना- - -

सां सां सांसां ०	सां सां सांसां ०	सां सां सांसां -प	गप मग $^{रे}$ग -
हिं दी हैंहम ०	हिं दी हैंहम ०	हिं दी हैंहम -व	तन है- - -

गम प^{ध} मग -रे	सासासा सानि़ ध़प़	ग गुरे सारे -नि़	सा सा - -
हिं- दो स्तां -ह	मा राह मा-रा-	सा रे- जहाँ -से	अ च्छा - -

ग ग गग -रे	म ग - -	प प पप -ग	मध प - -
सा रे जहाँ -से	अ च्छा - -	हिं दो स्तां -ह	मा- रा - -



डॉ. मोहम्मद इक़बाल

उर्दू और फारसी के मशहूर शायर डॉ. मोहम्मद इक़बाल का जन्म स्यालकोट, पंजाब में हुआ। इनके पूर्वज कश्मीरी ब्राह्मण थे, जिन्होंने तीन सौ साल पहले इस्लाम धर्म ग्रहण किया और कश्मीर से पंजाब में आ बसे। डॉ. इक़बाल ने पंजाब विश्वविद्यालय से दर्शन शास्त्र में एम्.ए. किया और बाद में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए यूरोप गए। इसके पश्चात् जर्मनी से वापस आकर इन्होंने लन्दन में बैरिस्टरी की परीक्षा उत्तीर्ण की एवं स्थाई रूप से लाहौर में रहने लगे।

इनकी मुख्य रचनाएँ हैं- 'बांगे-दिरा', 'ज़र्बे-क़लीम', 'बाले-जिब्रईल', 'अरमुग़ाने-हिजाज़।' इक़बाल की शायरी का प्रारंभ देश-प्रेम और साम्राज्य विरोधी भावना से हुआ।

इक़बाल ने अपनी रचनाओं के माध्यम से जो सन्देश दिया, उसका उद्देश्य पीड़ित भारतीय राष्ट्र में एक नयी चेतना और नये जीवन का संचार करना था। इन्होंने स्वाभिमान की भावना को पुनः जागृत करने की आवश्यकता पर बल दिया। इनका मानना था कि इस आवश्यकता की पूर्ति तभी संभव है, जब हमारे देश के सभी वर्गों के लोग परस्पर एकता बनाए रखें तथा जाति, वर्ग अथवा पंथ के प्रति संकीर्ण निष्ठाओं से ऊपर उठकर सामूहिक रूप से स्वाधीनता एवं देश निर्माण का कार्य करें। 'सारे जहाँ से अच्छा' तथा 'ये है मेरा वतन' में यही भाव व्यक्त किए गए हैं।

नौवाँ पुनर्मुद्रण 2012

प्रकाशक महानिदेशक, सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
प्लॉट नं.-15ए, सेक्टर-7, द्वारका,
नई दिल्ली-110075

आभार फोटो डिवीजन, नई दिल्ली
रीता बोकिल

इमेज प्रिन्ट्स, नई दिल्ली-110015